शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ७ : नई दिल्ली : १२-१८ मई २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता की ओर विहार करते हुए सैंथिया के निकट पधार गए हैं। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर १३ मई को पश्चिम बंगाल में प्रवेश कर १६ मई को त्रिदिवसीय प्रवास हेतु सैंथिया में पावन प्रवेश करेंगे। जून के प्रथम सप्ताह में आचार्यप्रवर का कोलकाता महानगर की सीमा में प्रवेश हो जाएगा, ऐसी संभावना है। कोलकाता के 'राजरहाट' में नवनिर्मित भव्य 'महाश्रमण विहार' में आचार्यप्रवर का २ जुलाई को मंगल चातुर्मासिक प्रवेश पूर्व निर्धारित है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर कोलकाता की ओर

भागलपुर से प्रस्थान

३० अप्रेल। त्रिदिवसीय प्रवास उपरान्त परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः भागलपुर से टूटापुल के लिए प्रस्थित हुए। आचार्यप्रवर श्री हंसराजजी बेताला की धर्मपत्नी को दर्शन देने समीपस्थ घर में पधारे। पूज्यप्रवर ने अक्षम श्राविका को दर्शन देकर उन्हें 'श्रद्धा विनय समेत' गीत भी सुनाया। मार्गवर्ती पिस्ता और बेजानी गांव के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। पिस्ता गांव के एक ग्रामीण ने मांसाहार का परित्याग किया। बेजानी के संजय पाण्डेय नामक व्यक्ति ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उनसे पूछा--'नशा करते हो?' वह बोला--'हां, करता हूं। संतन के आगे झूठ न बोले।' आचार्यप्रवर ने उसे नशा छोड़ने की प्रेरणा दी तो वह बोला--'बाबा! कोशिश करूंगा।' करीब १०.० किमी का विहार कर आचार्यप्रवर टूटापुल में स्थित चौहान पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के डायरेक्टर श्री संजय चौहान आदि ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में विनय समाधि, श्रुत समाधि, तपः समाधि और आचार समाधि को व्याख्यायित किया। कार्यक्रम में कोलकाता चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति की महामंत्री श्रीमती सूरज बरड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कोलकातावासियों ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

विद्यालय के डायरेक्टर श्री संजय चौहान ने आचार्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आपके आगमन से हमारा विद्यालय प्रांगण पावन हो गया। सबरी के घर जब श्रीराम पधारे और उद्धव के घर जब श्रीकृष्ण पधारे, उस समय सबरी और उद्धव की जो हालत हुई, आज वही स्थिति मेरी है। मैं भी आपको भगवान मानता हूं। प्रभो! आपके आगमन से मैं धन्य-धन्य हो गया।'

नागरिक अच्छे बनें, देश अच्छा बनेगा

१ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः टूटापुल से चकमुनियां की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान मखाना, गोविन्दपुर, पुरैनी बाजार, जगदीशपुर और टेकनी के ग्रामीणों को पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गोविन्दपुर में दर्शनार्थ समूह में खड़े एक ग्रामीण ने आचार्यप्रवर से निवेदन किया--'बाबा! कुछ समझाओ।' आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीनों उद्देश्यों को संक्षिप्त व्याख्या

के साथ समझाया। टेकनी में एक महिला ने आचार्यप्रवर के समक्ष अपनी पीड़ा रखी तो आचार्यप्रवर ने उसे मंगलपाठ सुनाया। मार्ग में एक भैंसा अत्यन्त दयनीय स्थिति में खड़ा था। संभवतः किसी वाहन की टक्कर से उसका दांया सींग पूरी तरह टूटकर उसके शरीर पर लटका हुआ था। ऐसी स्थिति में उसे कितनी पीड़ा हो रही थी, इसका केवल अनुमान ही किया जा सकता था। वह भैंसा प्रायः स्थिर अवस्था में खड़ा उस पीड़ा को झेल रहा था। आचार्यप्रवर ने उसे देखा तो उसके निकट अपने चरण थाम लिए। कुछ क्षण वहां खड़े रहने के उपरान्त आचार्यप्रवर ने उसके पास मंगलपाठ का समुच्चारण किया। पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान भागलपुर जिले की सीमा को अतिक्रान्त कर बांका जिले में प्रवेश किया। तेरह माईल चौक के थानाधिकारी श्री आशीषजी ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। लगभग १३.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर चकमुनियां में पधारे। नव उत्क्रमित उच्च विद्यालय में आज का प्रवास हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन के कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'ईमानदारी एक पवित्र तत्त्व है। उसके लिए दो बातें अपेक्षित हैं--मृषावाद से बचाव, चोरी से बचाव। ईमानदारी के सामने परेशानी आ सकती है, पर ईमानदारी परास्त नहीं होती। आदमी लोभवश बेइमानी कर लेता है। लोभ संयत रहे तो आदमी कितने-कितने पापों से बच सकता है। ईमानदारी के संस्कार विद्यार्थीकाल से ही प्राप्त होने चाहिए। बच्चे अच्छे होंगे तो भावी युवा और वृद्ध भी अच्छे हो सकेंगे। नागरिक ईमानदार बन जाएं तो देश अच्छा बन सकता है। यदि जन-जन में ईमानदारी के संस्कार जग जाएं तो तालों की अपेक्षा कितनी और क्यों रहेगी। इस संदर्भ में भारत तालामुक्त बन जाए तो बहुत बड़ी बात हो सकेगी।'

इस मुस्लिम बहुल गांव में आयोजित कार्यक्रम में समुपस्थित सैंकड़ों ग्रामवासियों ने आचार्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए। गांव के मुखिया श्री मोहम्मद नौशाद ने आचार्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। आचार्यप्रवर ने समुपस्थित बालक-बालिकाओं को कहानी सुनाते हुए जुआ न खेलने का संकल्प कराया तथा जीवन में विद्या के प्रकाश और अहिंसा की सौरभ को विकसित बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

समयज्ञ महापुरुष आचार्यश्री महाश्रमण

आज मध्याह्न में पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में समीक्षा परिषद की संगोष्ठी चल रही थी। संगोष्ठी की परिसम्पन्नता के समय में करीब दस मिनट अवशिष्ट थे कि मौसम का रूप बदल गया। तेज अंधड़ ने वातावरण को अपनी आगोश में ले लिया। आचार्यप्रवर के प्रवास कक्ष में मौसम के इस बदलाव का विशेष असर नहीं था, किन्तु आचार्यप्रवर ने समय से पूर्व संगोष्ठी को सम्पन्न कर महाश्रमणीजी को अपने प्रवास स्थल में जाने का निर्देश दे दिया। संगोष्ठी को समय से पहले सम्पन्न का कारण कइयों के समझ में नहीं आया, किन्तु महाश्रमणीजी आदि साध्वियां गुरुआज्ञा का पालन कर अपने प्रवास स्थल पहुंच गईं। कुछ ही देर में हवा के तीव्र वेग से धकेले जा रहे बादलों ने आकाश को आच्छादित कर दिया और मंद-मंद बौछारें होने लगी। थोड़े ही समय बाद तीव्र वर्षा भी शुरू हो गई और उसके साथ गिरने लगे ओले। देखते-देखते ही पूरे मैदान में ओलों की परत बिछ गई। हरा-भरा दिखने वाले मैदान में मानों सफेद चादर बिछा दी गई हो। यात्रियों के लिए लगाया गया टेंट तेज हवा के कारण गिर गया। उस टेंट पर भी हजारों ओलों ने अवस्थिति ले ली। कुछ समय पश्चात ओले बरसने बंद हो गए, किन्तु वर्षा काफी देर तक होती रही। वर्षा के होने से हवा में छाया हुआ मिट्टी का गुब्बार थम गया और मौसम ने सुहावना रूप धारण कर लिया। कुछ समय पश्चात वर्षा भी थम गई। पूज्यप्रवर द्वारा संगोष्ठी निर्धारित समय से पूर्व परिसम्पन्न करने का यह विरल अवसर था, किन्तु इसमें मुखरित हो रही आचार्यप्रवर की समयज्ञता के प्रति सभी प्रणत थे।

उसे मिलेगा निर्वाण

२ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः चकमुनियां से पुनसिया बाजार की ओर प्रस्थित हुए। यत्र-तत्र गिरे हुए वृक्ष और वृक्षों की डालियां गत कल के तूफान के प्रभाव को दर्शा रहे थे। कठियामा, राजवर तथा रजौन के ग्रामीणों को मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रजौन के ग्रामीण झुंड में से एक व्यक्ति बोला--'बाबा! हमें भी कुछ समझाइए।' आचार्यप्रवर ने उसके अनुरोध को स्वीकार कर साधुचर्या और अहिंसा यात्रा के विषय में संक्षिप्त अवगति प्रदान की। 'द वर्ल्ड स्कूल, रजौन' के विद्यार्थियों ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। मुख्यमुनिश्री ने पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार विद्यार्थियों को प्रेरणा देकर नशामुक्ति का संकल्प करवाया।

आज के विहार पथ के आसपास इमली के वृक्ष बहुलता लिए हुए थे। वृक्षों में लगी इमलियां आचार्यप्रवर की दृष्टि का विषय बनीं। बिहार-झारखंड की सीमा पर बसा यह क्षेत्र आदिवासी इलाके के रूप में जाना जाता है। स्थानीय परिवेश से यहां की संस्कृति को कुछ अंशों में ज्ञात किया जा सकता है। मार्ग में दोनों ओर स्थित सघन आम्रवृक्षों की छाया राहगीरों को राहत प्रदान करते हुए आम्रकुंज में होने का-सा अहसास करा रही थी। उन पर लगीं परिपक्वता के सन्निकट केरियां पथिकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रही थीं। करीब १२.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर पुनसिया बाजार में स्थित प्रोन्नत मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण बन सकता है। निर्वाण परम सुख का स्थान है। जिसके जीवन में धर्म होता है, उसे निर्वाण प्राप्त हो सकता है। निर्वाण शिखर पर आरोहण करने के लिए चौदह सीढ़ियां पार करनी होती हैं। इनमें प्रथम सीढ़ी पर अनंतानंत जीव अपना स्थान जमाए हुए हैं। हर प्राणी कभी न कभी प्रथम गुणस्थानवर्ती रहा है। अध्यात्म-साधना में विकास कर व्यक्ति इन सीढ़ियों में आरोहण कर सकता है। वर्तमान में हमारी दुनिया में अधिकतम सातवें गुणस्थान तक पहुंचा जा सकता है। जो ऋजु होता है, वह शुद्ध हो सकता है। जो शुद्ध होता है, उसमें धर्म ठहरता है। ऋजु व्यक्ति की आत्मा में शुद्धता हो सकती है। आदमी ऋजुता को आत्मसात कर निर्वाण की दिशा में आगे बढ़ सकता है।' कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री दिनेश प्रसाद 'दिनकर' ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

गुरु के आगमन से खिल उठा गुरुधाम, पुलकित हुए बटुक

३ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः पुनसिया बाजार से गुरुधाम की ओर प्रस्थान किया। मसुदनपुर, ढाका मोड़, बाराहाट, डफरनगर और मोतीहाट के ग्रामीण विहार के दौरान आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आईडीपीएस लीलावर्ण स्कूल के विद्यार्थियों ने भी मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सूर्य अपनी तेजस्विता के साथ आतप बरसा रहा था, किन्तु सामने की ओर से बह रही हवा तथा मार्ग के आसपास स्थित वृक्षों की छाया राहगीरों के लिए राहतदायक बनी हुई थी। मार्ग में 'मंदार पर्वत' के रूप में स्थापित एक पर्वत दूर से आचार्यप्रवर की दृष्टि का विषय बना। प्राचीन ग्रंथों में मंदार पर्वत से संबंधित अनेक घटनाएं प्राप्त होती हैं। बताया गया कि देव और दानवों द्वारा किए गए समुद्रमंथन में इसी पर्वत का उपयोग हुआ था। १५.५ किमी का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर 'गुरुधाम' परिसर में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। गुरुधाम ट्रस्ट इस्टेट से संबंधित लोगों

ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम गुरुधाम परिसर में स्थित मंदिर परिसर के आम्रवन में समायोजित हुआ। आम्रवृक्षों की सघन छाया से कृत्रिम छाया की अपेक्षा ही नहीं रही। इस स्थान पर कार्यक्रम समायोजित करने के संदर्भ में कार्यकर्ताओं ने गुरुधाम परिसर के प्रबन्धक श्री श्यामजी से संपर्क किया तो वे बोले--'इसके लिए तो गुरुधाम ट्रस्ट इस्टेट के सचिव श्री ऋषिकेश पाण्डेय की स्वीकृति लेनी होगी और वे भागलपुर में हैं। कार्यकर्ताओं द्वारा दूरभाष के द्वारा श्री पाण्डेय से संपर्क कर उन्हें अहिंसा यात्रा की जानकारी दी गई तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी। प्रबन्धक श्री श्यामजी बोले--'मुझे तो आश्चर्य हो रहा है, उन्होंने इतनी सहज रूप में स्वीकृति कैसे दे दी।' आज तक इस परिसर में गुरुधाम द्वारा समायोजित कार्यक्रम के सिवाय कोई भी कार्यक्रम नहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में संतोष को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। गुरुधाम में समुपस्थित बटुक भी पूज्यप्रवर के संबोध से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से गुरुधाम में अध्ययनरत बटुक अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण हेतु समुद्यत हुए तो आचार्यप्रवर ने संस्कृत भाषा में तीनों संकल्प करवाए।

बटुकों के शिक्षक श्री देवनारायण शर्मा ने आचार्यप्रवर के स्वागत में संस्कृत भाषा में अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए।

बटुकों ने आचार्यप्रवर के स्वागत में संस्कृत भाषा में 'हे महाशय! हे गुणाश्रय! स्वागतम् ते स्वागतम्' गीत का संगान किया। कार्यक्रम के अंत में 'ईशावास्योपनिषद' का वाचन करते हुए बटुक पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए और वहां खड़े-खड़े उसका सस्वर पाठ किया तो उपस्थित जनता भावविभोर हो उठी। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए संस्कृत भाषा में 'वदनं प्रसादसदनं...' श्लोक उच्चरित करवाते हुए उसे सीखने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम स्थल से प्रवास स्थल तक बटुक पूज्यप्रवर के आगे-आगे वेदमंत्रों का उच्चारण करते हुए चले। पूज्यप्रवर ने प्रवास स्थल में पधारने के उपरान्त 'वदनं प्रसादसदनं.....' का अर्थ बटुकों को बतलाया।

आचार्यश्री महाश्रमण ५६वां जन्मोत्सव

४ मई। वैशाख शुक्ला नवमी। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता महातपस्वी शांतिदूत परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का ५६वां जन्मोत्सव। चतुर्विध धर्मसंघ में उल्लासमय वातावरण। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः करीब चार बजे ज्यों ही विराजमान हुए, श्रीचरणों में अपने श्रद्धाभाव समर्पित करने विभिन्न क्षेत्रों से समागत श्रद्धालु पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हो गए। 'वन्दे गुरुवरम्' और 'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण' के घोष से वातावरण गुंजायमान हो उठा। श्रद्धालुओं ने चरणरस्पर्श कर परम पावन आचार्यप्रवर से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। मुनिवृन्द ने गीतों के द्वारा अपने आराध्य को वर्धापित किया। विभिन्न संस्थाओं और क्षेत्रों से संबद्ध लोगों ने अपनी-अपनी संस्था और क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए पूज्यपादांबुज में अपनी प्रणति अर्पित की।

करीब ५.५५ बजे पूज्यप्रवर का जन्म समय माना जाता है। उस समय आचार्यप्रवर के संसारपक्षीय परिवार दुगड़ परिवार के सदस्य थाली बजाते हुए तथा गीत का संगान करते हुए पूज्यप्रवर के समक्ष उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर के संसारपक्षीय पारिवारिकजनों ने अपने कुलगौरव की वर्धापना में अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए। पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल के बाहरी भाग में ध्वनि यंत्रों के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा युवाचार्य महाश्रमण के विषय में व्यक्त किए गए उद्‌गार प्रसारित होने लगे। इस प्रकार इस

छोटे-से गांव और स्थान में चारों ओर अलौकिक वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। हरियाणा से समागत श्रद्धालुओं ने 'मोदक' वितरित कर अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्त किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने गुरुधाम से श्याम बाजार की ओर प्रस्थान किया। मार्गस्थ बोंसी, सुजापुर और भंडारीचक के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। भंडारीचक स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय के विद्यार्थी आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ सड़क के दांयीं ओर खड़े थे। पूज्यप्रवर ने सड़क के उस पार विद्यार्थियों के निकट पधारकर उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया तथा उन्हें कुछ प्रेरणा देने के लिए एक संत को निर्देश प्रदान किया। तदनुसार विद्यार्थियों को उत्प्रेरित किया गया। विद्यासागर पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों को भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। भागलपुर जिला परिषद के अध्यक्ष श्री दुनदुन शाह सपरिवार वाहन से कहीं जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने आचार्यप्रवर को देखा तो वाहन रोककर वे तुरंत नीचे उतरे और आचार्यप्रवर के दर्शन कर जन्मदिवस के संदर्भ में पूज्यचरणों में अपनी मंगलकामना अर्पित की। करीब १०.३ किमी का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर श्याम बाजार स्थित दिव्या पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर की इस बिहार यात्रा का यह अंतिम पड़ाव स्थल है।

प्रवास स्थल में पधारने के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर को वन्दना की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने सम्पूर्ण साध्वी समाज की ओर से आचार्यप्रवर के चरणाम्बुज में मंगलभाव अर्पित किए। साध्वीवृन्द ने आचार्यप्रवर की वर्धापना में गीत का संगान किया।

वर्धापना कार्यक्रम में मुखरित हुए आन्तरिक आह्लाद और आस्था के भाव

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम पूज्यप्रवर के ५६वें जन्मोत्सव के संदर्भ में वर्धापना कार्यक्रम के रूप में समायोजित हुआ। कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य श्री एस.के. पासवान ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अभिव्यक्ति दी। सैंथिया ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्य चरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। आचार्यप्रवर के संसारपक्षीय अग्रज श्री सुजानमलजी दुगड़ तथा श्री सूरजकरणजी दुगड़ ने आचार्यप्रवर की वर्धापना में अपने भावों को अभिव्यक्त किया। दुगड़ परिवार की महिलाओं ने गीत के द्वारा अपने कुल गौरव को वर्धापित किया। बालमुनि मुनि प्रिंसकुमारजी, मुनि केशीकुमारजी और मुनि नमनकुमारजी ने आचार्यप्रवर के अभिनन्दन में अपनी-अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। मुनि हितेन्द्रकुमारजी, मुनि विनम्रकुमारजी, मुनि नम्रकुमारजी, मुनि पार्श्वकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी, मुनि कोमलकुमारजी, मुनि वर्धमानकुमारजी, आचार्यप्रवर की संसारपक्षीय भतीजी साध्वी सुमतिप्रभाजी, साध्वी कार्तिकयशाजी, साध्वी हिमांशुप्रभाजी, साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी समताप्रभाजी, साध्वी ऋद्धिप्रभाजी, साध्वी नम्रताश्रीजी और समणी विकासप्रज्ञाजी ने अपनी-अपनी प्रस्तुति के द्वारा अपने आराध्य का अभिनन्दन किया। मुनि मृदुकुमारजी ने आचार्यप्रवर के और अपने स्वयं के जन्मदिवस पर पूज्यप्रवर से आशीर्वाद की याचना की। साध्वीवृंद ने समूह गीत के द्वारा पूज्यप्रवर को वर्धापित किया। कोलकाता प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से श्रीमती कल्पना बैद, नेपाल-बिहार तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री नेमचंद बैद, चास बोकारो की ओर से श्री सुशील बैद, श्री प्रकाश गिड़िया, तेरापंथी महासभा के पूर्व न्यासी श्री विमलकुमार नाहटा और श्रीमती अजंता बैद ने पूज्यप्रवर के पदाम्बुज में प्रणति अर्पित की। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल और कोलकाता तेरापंथ महिला मंडल द्वारा पृथक-पृथक गीत प्रस्तुत किए गए।

मुख्यनियोजिकाजी ने आचार्यप्रवर की अभिवन्दना में कहा--'परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के व्यक्तित्व को अनेक रूपों में देखा जाता है। कोई आपको महान संत कहता है तो कोई साहित्यकार। कोई

आपको प्रवचनकार के रूप में देखता है तो कोई प्रशासक के रूप में आपके दर्शन करता है। इस प्रकार अनेक रूप आपमें दृष्टिगोचर होते हैं। मैं भी आपके व्यक्तित्व में अनेक रूपों के दर्शन करती हूं, किन्तु आपमें आत्मद्रष्टा का रूप मुझे विशेष बलवान रूप में दिखाई देता है। आत्मद्रष्टा का पहला लक्षण है कि वह देह में रहते हुए भी विदेह की साधना करता है। आम आदमी जहां भौतिक सुविधाओं में उलझा रहता है, वहीं आचार्यप्रवर विदेह की साधना में लीन हैं। आचार्यप्रवर की निस्पृहता आदर्श है। आपने कई सम्मानों को ससम्मान लौटा दिया। आत्मद्रष्टा ऋषि का दूसरा लक्षण है कि वह शब्द जगत में रहते हुए शब्दातीत अनुभूति करता रहता है। एक दिन में जाने कितने-कितने शब्द आचार्यप्रवर के श्रोत्रेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय के विषय बनते हैं। इन शब्दों के समुचित प्रत्युत्तर भी आप देते हैं। उसके बावजूद आप उनसे अप्रभावित रहते हैं। आत्मद्रष्टा ऋषि का तीसरा लक्षण है कि वह इन्द्रिय जगत में रहते हुए इन्द्रियातीत अवस्था का अनुभव करता है। इन्द्रिय विषयों से संपर्क होते हुए भी आचार्यप्रवर समत्वलीन रहते हैं। आज आपके जन्मदिन पर मैं आत्मद्रष्टा ऋषि के रूप में आपकी अभिवंदना कर रही हूं।'

साध्वीवर्याजी ने आचार्यप्रवर को वर्धापित करते हुए कहा--'स्थानांग सूत्र में पराक्रम के आधार पर व्यक्तित्व के चार प्रकार बताए गए हैं। क्षांतिशूर, तपःशूर, दानशूर और युद्धशूर। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी का व्यक्तित्व इन चारों विशेष गुणों से युक्त है। आप क्षांतिशूर हैं--जो सहिष्णुता की उत्कृष्ट साधना कर लेता है, वह क्षांतिशूर होता है। मुझे लगता है आचार्यप्रवर की सहिष्णुता अनुत्तर है। आचार्यप्रवर तपःशूर भी हैं। आचार्यप्रवर की बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार के तपों की साधना सधी हुई है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने आपकी विशिष्टतम तपःसाधना देखकर आपको महातपस्वी के रूप में संबोधित किया। आचार्यप्रवर दानशूर भी हैं। आपसे मिलने वाले समयदान, स्नेहदान और शब्ददान से आपका शिष्य समुदाय ही नहीं, जन-जन अभिभूत है। आचार्यप्रवर का व्यक्तित्व युद्धशूर भी है। क्रोध, मान, माया और लोभरूपी आंतरिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर आप युद्धशूर के रूप में प्रतिष्ठित हैं। जन्मोत्सव की इस शुभ बेला में मैं इस पराक्रम चतुष्टयी से युक्त आपके व्यक्तित्व की अभिवंदना करते हुए यही मंगलकामना करती हूं कि आप चिरायु हों, निरामय रहें तथा आपकी तेजस्वी, वर्चस्वी और यशस्वी अनुशासना में हम भी तेजस्विता को प्राप्त कर संघ की तेजस्विता की श्रीवृद्धि में योगभूत बने रहें।'

तेजस्विता रहे जीवन में

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया का हर आदमी ही नहीं, हर प्राणी जन्म लेता है और एक दिन अवसान को प्राप्त हो जाता है। कितना भी बड़ा शक्तिशाली व्यक्ति हो, चक्रवर्ती हो, तीर्थंकर हो, कोई भी हो, अवसान का अपवाद नहीं होता। जन्मदिन के प्रसंग में कइयों में उल्लास और उमंग का भाव भी देखा जाता है। यह भी उदारता कही जा सकती है कि किसी दूसरे के जन्मदिन पर उसे बधाई दी जाती है, उसके प्रति मंगलकामना की जाती है, उसके विषय में कुछ बताया जाता है। किसी-किसी के लिए हजारों वर्ष जीने की कामना की जाती है। हो सकता है कि सबकी सारी कामनाएं पूरी न भी हों, किन्तु हृदय में पवित्र भावना का होना महत्त्वपूर्ण बात होती है।

मनुष्य को यह ध्यान देना चाहिए कि मुझे यह सुन्दर मानव जीवन प्राप्त है, इसे मैं कैसे जीऊं? जिसके मन में अपने जन्मदिन के प्रति रूझान है उसे जन्मदिन पर यह सोचना चाहिए कि जीवन का एक वर्ष कम हो गया और आगे मुझे क्या करना चाहिए। मैं क्या विकास कर सकता हूं। क्या अच्छा कार्य कर सकता हूं। शतायु बनने की कामना स्थूल दृष्टि से अच्छी है, किन्तु इससे भी महत्त्वपूर्ण बात है, जीवन कैसे जीना। सौ या उससे ज्यादा वर्षों की आयु की प्राप्ति का कुछ महत्त्व हो सकता है, किन्तु इससे ज्यादा महत्त्व

इस बात का है कि आदमी जीवन कैसे जीता है। सामान्य रूप में सवा सौ वर्ष भी जी लिया तो क्या खास बात है, विशेष रूप में जीया गया मध्यम जीवनकाल भी महत्त्वपूर्ण हो सकता है। अंगारा बनकर मुहूर्त भर के लिए जीना भी श्रेयस्कर हो सकता है और धुंआ बनकर लंबेकाल तक जीना भी कोई महत्त्वपूर्ण नहीं होता। मेरा विचार है कि कौन कितना जीएगा, यह प्रायः हमारे हाथ की बात नहीं होती, किन्तु जीवन कैसे जीना, यह हमारे हाथ की बात हो सकती है। आदमी को इस पर अधिक ध्यान देना चाहिए कि जीवन में तपस्या की तेजस्विता कैसे बढ़ सकती है-वह अपने जीवन में स्वयं के लिए और दूसरों के लिए क्या कर सकता है?

जीवन में पुरुषार्थ का महत्त्व होता है। आदमी को विवेकयुक्त सत्पुरुषार्थ करना चाहिए। भाग्य का महत्त्व हो सकता है, सफलता और असफलता में उसका कुछ योगदान भी हो सकता है, किन्तु आदमी को भाग्य भरोसे नहीं बैठना चाहिए। मेरा मानना है कि वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है जो भाग्य भरोसे बैठ जाता है। भाग्य को जाना जा सकता है, किन्तु उसके भरोसे बैठना नहीं चाहिए। भाग्य होने की चीज है और सत्पुरुषार्थ करने की चीज है। जो आदमी विवेकयुक्त सत्पुरुषार्थ करता है, वह अपने जीवन में कुछ वैशिष्ट्य को प्राप्त कर सकता है। इसके साथ बड़ों का साया और मार्गदर्शन मिलता रहे तो आदमी को आगे बढ़ने में सहायता मिल सकती है। आप लोग पंडाल में बैठे हैं। ऊपर छाया है तो बैठने में सहायता मिल गई। छाया न हो तो ज्यादा देर बैठने में कठिनाई भी हो सकती है। इसी प्रकार जीवन में बड़ों का साया मिलने से पलने-पुसने और आगे बढ़ने में सहायता मिल सकती है, सुविधा हो सकती है।

मेरे संसारपक्षीय पिता श्री झुमरमलजी दुगड़ का साया मुझे ज्यादा नहीं मिला। मैं लगभग सात वर्ष का था, तभी उनका साया मेरे ऊपर से उठ गया। संभवतः मैं उनकी विशेष सेवा भी नहीं कर सका। मैंने उन्हें देखा कि वे सवेरे माला फेरते थे। मेरी संसारपक्षीया मां नेमांदेवी दुगड़ का साया मुझे मिला था। मुझे ऐसा लगता है कि उन्होंने मुझे चारित्रात्माओं के संपर्क में लाने का कार्य किया। इस प्रकार उन्होंने एक अच्छे मार्ग पर मुझे ला दिया। मुझे पिता का साया ज्यादा नहीं मिला, किन्तु मेरे संसारपक्षीय सर्वज्येष्ठ भ्रात सुजानमलजी दुगड़ का साया मुझे मिला और किसी रूप में वह साया आज भी प्राप्त है। पिता की अनुपस्थिति में बड़े भाई पितृस्थानीय हो सकते हैं। साया मिलने से विकास में कुछ सुविधा हो सकती है।

परम पूज्य आचार्य तुलसी ने कितना श्रम किया। उन्होंने राजस्थान से कोलकाता और कोलकाता से पुनः राजस्थान, राजस्थान से दक्षिण भारत और दक्षिण भारत से पुनः राजस्थान--इस प्रकार कितनी यात्राएं कीं। आज की तुलना में उनकी यात्रा में व्यवस्थाएं भी कुछ कम रही होंगी, फिर भी गुरुदेव ने किस प्रकार यात्राएं कर लीं। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने वृद्धावस्था में भी यात्रा की और मुम्बई तक पधार गए। गुरुद्वय ने अपने जीवन में विशेष कार्य किया, श्रम किया। गुरुदेव तुलसी के सामने कितने विरोध-संघर्ष आए। उनमें कितना चिंतन और गहराई थी। कैसी उनकी कार्यशैली थी। आचार्य महाप्रज्ञजी के चिंतन में कितना गांभीर्य, वाणी में कितना माधुर्य और मस्तिष्क में कितना धैर्य था।

जो जीवन में कुछ बनना चाहता है, कुछ अच्छा करना चाहता है, उसमें कुछ कठिनाइयों को झेलने की क्षमता भी होनी चाहिए। कठिनाइयों की स्थिति में भीतर में प्रसन्नता रह सके, ऐसा अभ्यास करना चाहिए। कठिनाइयों से घबराते रहेंगे तो आगे बढ़ने में कठिनाई हो सकती है।

मनुष्य अपने जीवन को योजनाबद्ध तरीके से जीने का प्रयास करे तो कुछ निष्पत्ति प्राप्त हो सकती है। सामान्य जीवन तो कीड़े-मकोड़े भी जीते हैं। कुछ अच्छा और कुछ विशेष करने की भावना मन में रहनी चाहिए। इसके साथ बड़ों का मार्गदर्शन और प्रेरणा मिलती रहे तो विकास करने में सहायता और

अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। आग को थोड़ा चलित करने से वह ज्वलित हो जाती है, सांप को छेड़ने से वह फन उठा लेता है, आदमी को कोई झंझोड़े, प्रेरणा दे तो उसकी तेजस्विता उभर सकती है। इसलिए आदमी को खुद को पुरुषार्थ करना चाहिए और साथ में बड़ों का पथदर्शन भी मिलता रहे, तो वह सत्पुरुषार्थ और अधिक कारगर हो सकता है। इस प्रकार कितना जीना इस बात को गौण रखकर कैसे जीना इस बात को अधिक महत्त्व देना चाहिए।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बिहार प्रान्त की प्रलंब यात्रा परिसम्पन्न कर झारखंड प्रान्त में मंगल प्रवेश

५ मई। वैशाख शुक्ला दशमी। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी का आठवां पदाभिषेक दिवस। उल्लसित चतुर्विध धर्मसंघ। प्रातः अर्हत्वन्दना से पूर्व मुनिवृन्द ने अपने आराध्य की अभ्यर्थना में गीत की प्रस्तुति दी। आचार्यप्रवर ने 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का संगान प्रारम्भ किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः छह बजे के उपरान्त बिहार स्थित श्याम बाजार से झारखंड स्थित बनियारा की ओर प्रस्थान किया। मार्गस्थ बजरंगपुर गंगरी और भल्लोर बस्ती गांव के ग्राम्यजन पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीष से लाभान्वित हुए। मार्गवर्ती शिव-पार्वती धाम से संबद्ध लोगों के अनुरोध पर आचार्यप्रवर उसके भीतर पधारे और मंगलपाठ सुनाया।

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर ने आज बिहार प्रान्त की प्रलंब पदयात्रा परिसम्पन्न कर करीब ७.०३ बजे झारखंड प्रान्त में मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर बिहार के श्रद्धालुओं ने पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए तो झारखंड के श्रद्धालुओं ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। झारखंड आचार्यप्रवर द्वारा इस अहिंसा यात्रा के दौरान स्पृष्ट होने वाला हिन्दुस्तान का ग्यारहवां और आचार्य पदाभिषेक के बाद स्पृष्ट होने वाला तेरहवां राज्य है। किसी समय बिहार राज्य के ही अंग रहे इस राज्य को बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि के रूप में जाना जाता है। आचार्यप्रवर ने झारखंड के दुमका जिले में प्रवेश किया।

आज विहार पथ के आसपास का दृश्य प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण था। छोटी-छोटी पहाड़ियों पर विशाल और लघु आकार के पत्थर इस प्रकार अवस्थित थे, मानों उन्हें करीने से सजाया गया हो। दूर-दूर तक दृष्टिगोचर हो रहे विभिन्न सघन वृक्ष और झिंगुरों की तीक्ष्ण, किन्तु कर्णप्रिय आवाज राहगीरों को जंगल में होने का अहसास करवा रहे थे। प्राकृतिक रमणीयता के बावजूद आज के विहार पथ की विषमता पथिकों को थकाने के लिए मानों कृतसंकल्प थी। निर्मीयमाण राजमार्ग पर स्थान-स्थान पर गहरे गड्ढे बने हुए थे। प्रायः पूरा पथ कच्चे मार्ग का रूप लिए हुए था। वाहनों के आवागमन के कारण उड़ रही हल्के लाल रंग की मिट्टी लोगों के कपड़ों का ही नहीं, चेहरों और शरीर का रंग बदलने में भी सक्षम प्रतीत हुई। सूर्य का तीव्र आतप शरीर को पसीने से तरबतर बनाए हुए था, ऐसे में मिट्टी शरीर पर आसानी से चिपक रही थी। इतना सबकुछ होते हुए भी आचार्यप्रवर का समत्व भाव अडोल रहा। इस कारण पथ की प्रतिकूलता पूज्यचरणों की गति में बाधक नहीं बन पाई और करीब १३.० किमी का विहार कर आचार्यप्रवर बनियारा में पधारे। आज का प्रवास राजकीय बुनियादी विद्यालय में हुआ।

प्रवास स्थल में पदार्पण के उपरान्त साध्वीवृंद ने आचार्यप्रवर को वंदना की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने संपूर्ण साध्वी समाज की ओर से श्रीचरणों में मंगलभाव अर्पित करते हुए नई प्रमार्जनी उपहृत की। आचार्यप्रवर ने उसे हाथ में लेकर अपने कंधे पर रखा तो उपस्थित साधु-साध्वियों ने आचार्यप्रवर की अभिवन्दना की। साध्वीवृंद ने गीत के द्वारा आचार्यप्रवर को वर्धापित किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : ८वां पट्टोत्सव

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम आचार्यप्रवर के ८वें पट्टोत्सव के रूप में समायोजित हुआ। मुख्यमुनिश्री ने आचार्यप्रवर की अभिवंदना करते हुए कहा--'आज परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर का आठवां पट्टोत्सव है। आज के इस अवसर पर चतुर्विध धर्मसंघ आह्लादित है। आचार्यप्रवर संपूर्ण व्यक्तित्व के धारक हैं, क्योंकि आचार्यप्रवर शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक शक्ति से संपन्न हैं। आचार्यप्रवर ने शारीरिकबल के आधार पर अब तक ४०,००० से ज्यादा किलोमीटर की पदयात्रा कर ली है। आचार्यप्रवर की मानसिक शक्ति भी प्रखरता लिए हुए है। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आपका मानसिकबल तेजस्विता लिए हुए रहता है। आपका अनौत्सुक्य हमारे लिए प्रेरणास्पद है। आचार्यप्रवर की बौद्धिक क्षमता भी अत्यंत विलक्षण है। तर्कबल के आधार पर आचार्यप्रवर को जीतना दुष्कर है। आपकी तीक्ष्ण स्मृति आपकी विलक्षण मेधा की परिचायक है। आपकी कषायमंदता आपकी भावनात्मक शक्तिसम्पन्नता को दर्शाती है। आपकी वीतरागता की साधना हम सबके लिए आदर्श है। कथनी-करनी की एकता के आप साक्षात उदाहरण हैं। ऐसे अनुशास्ता को पाकर तेरापंथ धर्मसंघ धन्य है। संयोगवश आज आचार्यप्रवर के आराध्य भगवान महावीर का कैवल्य कल्याणक दिवस भी है। आज के दिन आचार्यप्रवर से यही वरदान चाहूंगा कि सुदीर्घकाल तक हमें आपकी शासना मिलती रहे। आप निरामय रहें और आपके पावन मार्गदर्शन में हम कषायमंदता की साधना में उत्तरोत्तर आगे बढ़ते रहें। मुख्यमुनिश्री ने इस अवसर पर स्वरचित गीत 'शांतिदूत की जय हो जय' का संगान भी किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यप्रवर को वर्धापित करते हुए कहा--आज का दिन तेरापंथ धर्मसंघ और जैन परंपरा के लिए ऐतिहासिक दिन है। जैन परंपरा के लिए यह दिन ऐतिहासिक इसलिए है कि आज के दिन भगवान महावीर ने कैवलज्ञान प्राप्त किया और तेरापंथ धर्मसंघ के लिए आज का दिन महत्त्वपूर्ण इसलिए भी है कि आज के दिन ग्यारहवें अनुशास्ता ने विधिवत रूप में संघ की बागडोर संभाली। मुनि मुदितकुमारजी एक साधारण साधु के रूप में धर्मसंघ में दीक्षित हुए। उनके भीतर प्रतिभा और योग्यता छुपी हुई थी। नवमाचार्य आचार्य तुलसी ने उन्हें देखा, परखा तो वे प्रभावित हुए और उन्होंने उन पर ध्यान देना शुरू किया। उदयपुर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्य तुलसी ने मुनि मुदितकुमारजी को युवाचार्य महाप्रज्ञजी के अंतरंग सहयोगी के रूप में नियुक्त किया। उन्होंने इसका कारण बताया कि मुनि मुदित अनाकांक्ष है, अनासक्त है, सहज है। अपनी धुन में मस्त रहने वाला साधु है। इसके बारे में मेरी धारणा है कि यह संघ के लिए भावी आशा का केंद्र बनेगा। एक आचार्य द्वारा संघ के लिए की गई वह भविष्यवाणी पूरे संघ को आशवस्ति देने वाली थी। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी ने मुनि मुदित को शिक्षित, प्रशिक्षित किया। अपने अनुभवों और ज्ञान से लाभान्वित किया। इस प्रकार तेरापंथ धर्मसंघ को आचार्य महाश्रमण के रूप में एक सुयोग्य आचार्य मिले, जो पूरे संघ की बागडोर कुशलता से थामे हुए हैं।

आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व को किस कोण से विश्लेषित करूं। अनंत व्यक्तित्व के अनंत कोण हैं। अनंत कोणों को शब्दों से व्यक्त करना संभव नहीं है। इसलिए कुछ ही बातों को प्रस्तुत किया जा सकता है। आचार्यप्रवर की सन्निधि में आने वाले न केवल तेरापंथ समाज के अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर लोग भी आपकी करुणार्द्रता का अनुभव करते हैं। इस विषय में सबके अपने-अपने अनुभव होंगे। मैं भी अपना अनुभव सुनाना चाहती हूं।

२८ मार्च २०१६ का दिन मुझे याद है। हम लोग पूज्यप्रवर के सान्निध्य में कोकड़ाझार में थे। पैरों में दर्द के कारण मेरा चलना मुश्किल हो रहा था। साध्वियां चाहती थीं कि हम सीधा गुवाहाटी चलें। उस

अनुरूप निर्णय भी हो गया था कि हमलोग आचार्यप्रवर से पहले गुवाहाटी जाएंगे। जहां से गुवाहाटी का रास्ता अलग हो रहा था, वहां तक पूज्यप्रवर के साथ रहने की बात थी। कोकड़ाझार में साध्वियां आचार्यप्रवर की सन्निधि में पहुंचीं। आचार्यप्रवर ने मुझे याद कर फरमाया कि--'आपके दर्द ज्यादा है तो हम लोग सीधे गुवाहाटी चलें?' मैंने गुरुदेव से निवेदन किया कि आपकी यात्रा बीच में नहीं रुकनी चाहिए, क्योंकि आप पिछले छह वर्षों से अपनी पूर्व घोषणा के अनुसार यात्रा कर रहे हैं। इसमें अवरोध नहीं आना चाहिए। आप यथावत यात्रा करें, हमें गुवाहाटी भेजने की कृपा करें। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि यात्रा खास बात नहीं है। अक्षय तृतीया का कार्यक्रम तेजपुर घोषित है, वह भी गुवाहाटी में हो सकता है। इसलिए सीधे गुवाहाटी चलें। मेरे विशेष अनुरोध पर आचार्यश्री ने अपनी यात्रा में कोई व्यवधान नहीं आने दिया, लेकिन कितनी करुणाशीलता थी। उन्हीं दिनों की बात है कि पैरों के ज्यादा दर्द के कारण मेरा आचार्यप्रवर के पास आना-जाना ज्यादा नहीं होता तो परमपूज्य आचार्यप्रवर स्वयं दर्शन देने पधारते। आचार्यप्रवर ने बहुत कृपा कर फरमाया कि आपको यहां आने की जरूरत नहीं है। मैंने निवेदन किया कि पैदल चलने में दिक्कत है, किन्तु साधन से या व्हीलचेयर से तो आ ही सकती हूं, लेकिन आचार्यप्रवर ने फरमाया कि फिलहाल तो प्रातराश से पहले एक बार हम आएंगे। बहुत निवेदन करने पर भी आचार्यप्रवर ने मेरे निवेदन को स्वीकार नहीं किया। यहां तक फरमाया कि हम आएं तो आप अपनी सुविधानुसार लेटे रहें या बैठे रहें, हम वहां आकर बैठ जाएंगे। 'आचार्यप्रवर! मैं तो आज भी उस बात को याद कर द्रवित हो रही हूं।' (साध्वीप्रमुखाजी यह फरमाते-फरमाते इतने भाव-विभोर हो उठे कि उनका गला अवरुद्ध हो गया।)

दूसरी बात है सत्यभाषिता। आपके आसपास में रहने वाला संभवतः हर व्यक्ति यह अनुभव करता है कि आचार्यप्रवर की सत्यनिष्ठा अनुत्तर है। आचार्यप्रवर इस बात के लिए पूरे जागरूक रहते हैं कि असत्य का अंश भी उनकी वाणी का स्पर्श न करे। इस बात को पुष्ट करने वाले अनेकानेक प्रसंग हैं।

तीसरी बात परोपकार के लिए समर्पित शरीर। आचार्यप्रवर सर्दी हो या गर्मी हो या वर्षा हो, आंधी या तूफान हो, परवाह नहीं करते। जनता के कल्याण के लिए आप निरंतर गतिमान रहते हैं। आचार्यश्री ने अपना पूरा शरीर जनहित में समर्पित कर रखा है। इसलिए कठिन से कठिन परिस्थितियों में आप का मन विचलित नहीं होता। अनुकूल-प्रतिकूल सब परिस्थितियों में आपके वदनारविन्द पर वही आनंद तैरता रहता है। आचार्यप्रवर की करुणाशीलता, सत्यभाषिता, परहित में समर्पित जीवन और विशिष्ट ज्ञानदृष्टि के प्रति हम सभी प्रणत हैं। पूरे धर्मसंघ में ये चारों दृष्टियां विकसित हों, आज के पुनीत अवसर पर यही कामना करती हूं। महाश्रमणीजी ने इस प्रसंग में स्वरचित कविता भी प्रस्तुत की, जो यहां प्रस्तुत है--

जीवन पथ ज्योतिर्मय कर दो जय ज्योतिचरण।
मृण्मय को तुम चिन्मय कर दो जय महाश्रमण।।

है अन्तहीन नभ-सा विशाल मानस पावन।
करुणा का निर्झर बरस रहा मानो सावन।
कण-कण में अमित ओज भर दो जय ज्योतिचरण।
कर्मों का सकल बोझ हर दो जय महाश्रमण।।

चिन्तन उदार अरमान अमल पर-उपकारी।
है प्रणत सुपावन चरणों में दुनिया सारी।

बन सिन्धु धरा पर लहराओ जय ज्योतिचरण।
जागृति के अमर गीत गाओ जय महाश्रमण।।

संयम सुरतरु की छाया में तुम देव! पले।
इन्द्रिय-संयम के सांचे में तुम सहज ढले।
मन संयम बड़ा अनुत्तर है जय ज्योतिचरण।
वाणी का संयम गुरुतर है जय महाश्रमण।।

आहत मन झट राहत पाता दर पर आकर।
सतयुग में परिणत हो जाता कलयुग द्वापर।
तुम सत्य और शिव सुन्दर हो जय ज्योतिचरण।
गणनायक धर्म धुरंधर हो जय महाश्रमण।।

प्रबल सौभाग्य से मिला है तेरापंथ शासन

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अनुशास्ता परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सक्कत्थुई में अर्हतों को नमस्कार किया गया। उनके लिए अनेक बातें बताई गईं। दो बातें बताई गईं-सर्वज्ञ और सर्वदर्शी। आज वैशाख शुक्ला दशमी का दिन है। परमात्मा, परमप्रभु, हृदय सम्राट भगवान महावीर का कैवल्य कल्याणक दिन है। आज का हमारा सूर्योदय बिहार प्रान्त में हुआ। वे बिहार प्रान्त से जुड़े हुए थे। उन्होंने कैवल्य प्राप्त किया तो यों मानना चाहिए कि उन्होंने तीर्थंकरत्व की आधारभूमि प्राप्त कर ली। तीर्थंकरत्व की वह आधारभूमि उन्होंने आज के दिन प्राप्त की थी और आज के दिन मुझे तीर्थंकर के प्रतिनिधि का स्थान विधिवत रूप में प्राप्त हुआ था। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ जैन शासन का एक संप्रदाय है। हमारे प्रथम अनुशास्ता महामना आचार्य भिक्षु हुए। उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा आगे बढ़ी और दूसरे आचार्य परमपूज्य आचार्य भारमलजी स्वामी हुए। तीसरे आचार्य परमपूज्य रायचंदजी स्वामी हुए। चौथे आचार्य परमपूज्य जयाचार्य हुए। पांचवें आचार्य परमपूज्य मघवागणी हुए। छठे आचार्य परमपूज्य माणकगणी हुए। सातवें आचार्य परमपूज्य डालगणी हुए। आठवें आचार्य परमपूज्य कालूगणी हुए। नवें आचार्य परमपूज्य आचार्य तुलसी और दसवें आचार्य परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी हुए। मैंने महामना कालूगणी तक आठ आचार्यों को नहीं देखा। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी को देखने और उनके चरणों में निकटता से रहने का अवसर मुझे मिला।

आज का यह दायित्व ग्रहण का दिवस मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि जन्मदिन और दीक्षा दिन तो औरों का भी आ सकता है, हमारे धर्मसंघ में वर्तमान में विद्यमान चारित्रात्माओं में यह दिन (सर्वोच्च दायित्व ग्रहण का) अभी तो मेरा ही आता है। आज मेरे दायित्व ग्रहण का आठवां वर्ष प्रारम्भ हुआ है। मैं चाहूंगा कि साध्वीप्रमुखाजी मुझे मंगलपाठ सुनाएं। (आचार्यप्रवर पट्ट से नीचे उतर कर खड़े हो गए। साध्वीप्रमुखाजी ने खड़े होकर कहा--'मैं आचार्यश्री के अनुशासन में हूं, इसलिए आचार्यप्रवर की आज्ञा का पालन करते हुए मंगलपाठ उच्चरित कर रही हूं। अन्यथा तो हम आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण करते हैं।' साध्वीप्रमुखाजी ने मंगलपाठ का उच्चारण किया। पूज्यप्रवर पुनः पट्टासीन हुए।)

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने मुझे इस रास्ते पर खड़ा किया था। हालांकि परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी को उनसे अभिन्न ही मान लूं फिर भी वैधानिक रूप में गुरुदेव तुलसी ने मुझे इस मार्ग पर खड़ा किया था। आचार्य महाप्रज्ञजी ने मुझे इस रास्ते पर और आगे बढ़ा दिया तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के भविष्य

का सर्वोच्च दायित्व मेरे नाम कर दिया। परम पूज्य गुरुद्वय के सान्निध्य में रहने का मुझे मौका मिला। आज वह अवसर साक्षात् रूप में मुझे प्राप्त नहीं हो रहा है।

मुझे साध्वीप्रमुखाजी का सामीप्य प्राप्त है। उधर शासन स्तंभ श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री की विद्यमानता भी मुझे प्राप्त है। इसके साथ हमारे अन्य साधु-साध्वियां 'समणश्रेणी' तथा श्रावक-श्राविकाएं भी हैं।

पहली बात--जीवन में करुणा की भावना हम सभी में रहनी चाहिए। करुणावान आदमी बहुत पापों से बच सकता है। दूसरी बात--हम सभी में स्वास्थ्यानुरूप श्रमशीलता भी रहनी चाहिए। तीसरी बात--हमारे में यथार्थ और देव, गुरु व धर्म के प्रति श्रद्धा का भाव रहना चाहिए। चौथी बात-हमारे मन में पूज्यों के प्रति नम्रता, विनम्रता का भाव रहना चाहिए। ये चारों बातें जीवन में होती हैं तो आत्मोत्थान भी किया जा सकता है और जीवन में सफलता को भी प्राप्त किया जा सकता है।

हमारे धर्मसंघ में एक सर्वोच्च नेतृत्व की व्यवस्था है। आज सवेरे संत श्रद्धाभाव या कर्त्तव्यभाव से गीत गा रहे थे। मैंने तो उस समय तेरापंथ शासन को याद किया कि हमारे भाग्य हैं कि हमें ऐसा शासन प्राप्त हुआ। (पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया।) यह भैक्षव शासन, तेरापंथ शासन हमें प्राप्त है। इसका मतलब हमारा भाग्य प्रबल है। हमारे धर्मसंघ में एक आचार्य का सर्वोच्च निर्देश-आदेश चलता है। विहार-चतुर्मास आचार्य के निर्देशानुसार होते हैं। व्यवस्थाओं का संचालन चलता है। हमारा इतना बड़ा संत समाज और संतों से भी बड़ा साध्वी समाज है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी साधिक ४५ वर्षों से साध्वीप्रमुखा के रूप में अपनी सेवाएं दे रही है। मैंने तो आपके लिए कहा भी था कि असाधारण साध्वीप्रमुखा हैं। आपकी अपनी साधना है, ज्ञान भी है। तीसरी पीढ़ी की सेवा में संलग्न हैं। आपके लिए भी यह अच्छी बात है कि इतने लंबे काल से सेवा का अवसर प्राप्त है। हालांकि गुरुकुलवास में अभी तो कम साध्वियां हैं तो कुछ कम श्रम करना पड़ता होगा, फिर भी कुछ चिंतन-मंथन तो दूर से भी हो जाता है। मैं आपको व्यवस्थित रूप में कुछ और सहयोग देना चाहता हूं।'

मुख्यनियोजिकाजी महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी की अनंतर सहयोगी के रूप में नियुक्त

पूज्यप्रवर ने प्रवचन के मध्य मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को आह्वान कर कहा--'मैंने एक पत्र लिखा है--

अर्हम् ०५.०५.२०१७

मैं आचार्य महाश्रमण साध्वी विश्रुतविभाजी को साध्वी समुदाय की व्यवस्था के संदर्भ में असाधारण साध्वीप्रमुखा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की अनंतर सहयोगी के रूप में 'मुख्यनियोजिका' के पद पर नियुक्त करता हूं।

बनियारा, झारखंड **आचार्य महाश्रमण**

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'साध्वीप्रमुखा का सहयोग होता रहे। वैसे तो मुख्यनियोजिकाजी पहले से वर्षों से कार्यरत हैं ही। मैंने थोड़ा वैधानिक और व्यवस्थित रूप दे दिया।' (मुख्यनियोजिकाजी ने पूज्यप्रवर को सविधि वंदना की। आचार्यप्रवर ने आशीर्वाद की भाषा में कहा--'खूब अच्छा कार्य चले।')

साध्वीवर्याजी को समणश्रेणी के व्यवस्था संचालन का दायित्व प्रदत्त

तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी को आह्वान कर कहा--'मैंने इनके लिए एक पत्र लिखा है--

अर्हम् ०५.०५.२०१७

मैं आचार्य महाश्रमण साध्वीवर्या संबुद्धयशा को आचार्यप्रवर के अनुशासन-निर्देशन के अंतर्गत समणश्रेणी के व्यवस्था संचालन का विध्यनुरूप दायित्व सौंपता हूं। समणश्रेणी की व्यवस्था के संदर्भ में आचार्यप्रवर से सीधा संपर्क सामान्यतया साध्वीवर्या का रहे।

बनियारा, झारखंड **आचार्य महाश्रमण**

(साध्वीवर्याजी ने आचार्यप्रवर को विधिवत वंदन किया। आचार्यप्रवर ने फरमाया--'मुमुक्ष और बोधार्थी बहनों का दायित्व पहले से साध्वीवर्या का है ही, अब समणश्रेणी के व्यवस्था संचालन का दायित्व भी आचार्यप्रवर के अनुशासन-निर्देशन में साध्वीवर्या का है। समणी नियोजिका इनकी सहयोगी के रूप में रहेगी। मुख्य दायित्व इनका है।)

पूज्यप्रवर ने मुख्यनियोजिकाजी और साध्वीवर्याजी को नए दायित्व के संदर्भ में क्रमशः १०.५८ a.m. तथा १०.५९ a.m. बजे मंगलपाठ सुनाया। मंगलपाठ सुनाने के पश्चात आचार्यप्रवर ने फरमाया--'इस मंगलपाठ के साथ नई व्यवस्था लागू हो गई है।' साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यप्रवर से निवेदन किया--'गुरुदेव! मुख्यनियोजिकाजी तो पहले से जुड़े हुए ही हैं।' आचार्यप्रवर ने फरमाया--'वैसे तो जुड़े हुए ही थे। आज जो व्यवस्था की गई है, उसमें कुछ रहस्य है, वह मेरे पास है।'

आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में आगे कहा--'हमारे धर्मसंघ के पूर्वाचार्यों ने हमारे शासन के विकास और संरक्षण के लिए कितना परिश्रम किया था। समय का नियोजन किया था। मैंने तो गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी को देखा है। गुरुदेव तुलसी ने तो कितना-कितना श्रम लगाया। कितनी स्थितियां उनके सामने आईं और कितने आरोह-अवरोह के प्रसंग उनके सामने आए। मैं तो एक बालक था। उन्होंने मेरे रूप में एक बालक को किस प्रकार आगे लाने का प्रयास किया। किस प्रकार आलंबन दिया और आगे बढ़ाया। कहां से मेरी यात्रा शुरू करवाई-बीच-बीच में पड़ाव देते-देते मुझे आगे बढ़ाते गए और मानों शिखर तक पहुंचाने की भूमिका उन्होंने बनाई और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने भावी दायित्व तो सौंपा ही सौंपा, इसके साथ उन्होंने मुझे कार्य करने का अवसर भी दिया, मानों मुझे विश्वास दिया।

व्यक्तित्व निर्माण एक बहुत बड़ा कार्य है, जो आचार्य अन्तरंग भावना से सेवा करते हैं, वे कितनी कर्म निर्जरा कर लेते हैं, कितनों की साधना में सहायक बनते हैं।

शारीरिक अनुकूलतानुसार हमें परिश्रम तो करना ही चाहिए। क्योंकि बिना परिश्रम से सिद्धि में कठिनाई हो सकती है। हमारे साधु-साध्वियां भी कितना श्रम करते हैं। इतनी लंबी यात्रा में साथ रहते हुए करने वाले अपने-अपने ढंग से कार्य भी करते हैं। हम सभी के लिए यह ध्यातव्य है कि हम यथाशक्ति खूब श्रम करें। आगे बढ़ने का प्रयास करें। धर्मसंघ की यथासंभव सेवा करने का प्रयास करें, यह हमारा एक कर्त्तव्य भी है और हमारी आत्मा के लिए भी लाभदायी है। हमारा लक्ष्य संघपरक भावनायुक्त रहे। व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा की दृष्टि से नहीं, संघीय विकास की दृष्टि से ध्यान देना चाहिए और सेवा भी करनी चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--**'हमारे मुनि दिनेशजी हैं। इन्हें समुच्चय के कार्यों की बक्सीस की जा रही है।'**

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'हमारे श्रावक-श्राविकाएं भी संघ की कितनी सेवाएं करने वाले हैं। हम सभी सेवा पर भी ध्यान दें, अपने आचार, विचार और साधना के प्रति भी जागरूक रहें। मर्यादाओं के प्रति भी हमारी निष्ठा रहे और आज्ञा-अनुशासन के प्रति हमारी जागरूकता रहे। गुरु इंगित, गुरु आज्ञा

के प्रति सम्मान का भाव रहना चाहिए।

मैं आज के दिन दायित्व बोध की विशेष रूप से अनुभूति कर सकता हूं। मैं धर्मसंघ की सेवा करता रहूं। स्वयं भी अपनी साधना के प्रति जागरूक रहूं और औरों को भी जागरूक करने का प्रयास करूं, चित्त समाधि में सहयोग देने का प्रयास करूं, यह काम्य है।'

कार्यक्रम में बालमुनि ध्रुवकुमारजी और मुनि विवेककुमारजी ने पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। मुनि शुभंकरजी, मुनि सुधांशुकुमारजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि मननकुमारजी, मुनि अनेकांतकुमारजी, साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, साध्वी मैत्रीयशाजी, साध्वी सुषमाकुमारीजी, साध्वी लब्धिप्रभाजी, शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी ने पूज्यप्रवर के अभिवंदन में अपनी-अपनी प्रस्तुतियां दीं। मुनिवृंद, साध्वीवृंद और समणीवृंद ने पृथक्-पृथक् रूप में समूहस्वर में गीत प्रस्तुत किए।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया ने संपूर्ण तेरापंथ श्रावक समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए आचार्यप्रवर की अभिवंदना की। कोलकाता प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष श्री जतन पारख, कोलकाता तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री तेजकरण बोथरा, उत्तर हावड़ा तेरापंथ महिला मंडल, सैंथिया तेरापंथ महिला मंडल, झारखंड-चास-बोकारो के श्री मदनमोहन चोरड़िया ने आचार्यप्रवर के अभिनंदन में अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

अभिवंदना में 'अभिवंदना' की प्रस्तुति

कार्यक्रम में 'साध्वी सप्तक' (साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी अन्यत्र स्थित), साध्वी पुष्यप्रभाजी, साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी, साध्वी शरदयशाजी, साध्वी समताप्रभाजी और साध्वी ऋद्धिप्रभाजी) की ओर से गीत की प्रस्तुति के बाद पूज्यप्रवर की अभिवंदना में प्रस्तुत 'अभिवन्दना' पत्रिका पूज्यचरणों में उपहृत की गई। इस हस्तनिर्मित पत्रिका में आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में साध्वीवृन्द और समणीवृन्द द्वारा लिखे गए लेखों, गीतों, कविताओं आदि को कलात्मक रूप में गुंफित किया गया है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। कार्यक्रम के अंत में संघगान हुआ।

पट्टोत्सव पर धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियों को बक्सीस

कार्यक्रम के उपरान्त महाश्रमणजी के अनुरोध पर आचार्यप्रवर ने पट्टोत्सव के संदर्भ में धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियों के लिए बक्सीस प्रदान की जो इस प्रकार है--पूज्यप्रवर के अगले पट्टोत्सव तक (एक वर्ष तक) चाय पीने वाले साधु-साध्वियों को चाय के बदले किए जाने वाले विगयवर्जन तथा उष्णआहार वर्जन आदि से मुक्ति की बक्सीस तथा शेष (चाय नहीं पीने वाले) साधु-साध्वियों को औषधि संबंधी विगयवर्जन से मुक्ति की बक्सीस।

आज झारखंड के राजस्व, भूमि सुधार, कला-संस्कृति, खेल एवं युवा मामलों के मंत्री श्री अमरकुमार बाउरी ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

पूज्यप्रवर के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव और दीक्षोत्सव के संदर्भ में श्रद्धाभिव्यक्ति

आचार्यप्रवर के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव और दीक्षोत्सव के संदर्भ में कुछ विशिष्ट लोगों ने पत्रों के माध्यम से अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति की। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणी ने अपने पत्र में लिखा--'आचार्य तुलसी के शिष्य और आचार्य महाप्रज्ञजी के उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमणजी जैन धर्म के महान परिव्राजक के रूप में पदयात्रा कर रहे हैं। वे जन-जन के बीच जाकर देशभर में शांति, सद्भावना और अहिंसा का प्रकाश फैलाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए उनके जन्मदिन, पट्टोत्सव और दीक्षा

दिवस को मिशन के माहौल में मनाया जा रहा है।

राष्ट्रसंत महाश्रमणजी एक साधक, समाजसुधारक और धर्मानुशास्ता के रूप में हमें प्राप्त हुए हैं, यह समाज, राज्य और राष्ट्र के लिए गौरवास्पद घटना है।

उनकी इस त्रिआयामी यात्रा से समाज जागृति के उनके अभियान को और ज्यादा बल प्राप्त हो, ऐसी शुभकामना के साथ उनके पावन चरणों में मेरा वंदन प्रेषित करता हूं।'

भारत के वित्त राज्यमंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल के तीनों दिवसों के संदर्भ में तीन पत्र प्राप्त हुए। जन्मदिवस के संदर्भ में उन्होंने लिखा-'आपके पावन जन्मदिवस के मंगल अवसर पर आपको ढेरों शुभकामनाएं देता हूं। आपका इस धरा पर पदार्पण मानव मात्र के कल्याण के लिए हुआ है। आप इसलिए आप अहिंसा यात्रा के माध्यम से सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का परचम फहराकर 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' को चरितार्थ कर रहे हैं।'

पट्टोत्सव के संदर्भ में उन्होंने लिखा--'आज आपका पट्टोत्सव है। आप आचार्य भिक्षु की गद्दी के पट्टधर, जिसे यशस्वी युगप्रधान आचार्यों ने गौरवशाली परम्परा से आगे बढ़ाया, आपने भी उसी परंपरा का निर्वाह करते हुए न केवल भारत, अपितु विदेश की धरा को भी अपने पावन चरणकमलों से नापा है। आपने करोड़ों श्रद्धालुओं के दिलों पर राज करते हुए हमें भगवान महावीर की आगमवाणी की व्याख्या कर प्रतिबोधित किया।'

दीक्षोत्सव के संदर्भ में उन्होंने लिखा--'आप संतता के प्रतीक हैं व आपने महाव्रतों की दीक्षा लेकर अहिंसा यात्रा करते हुए अपने साथ-साथ अनेकों श्रद्धालुओं का भी जीवन धन्य किया। आपके मुनि जीवन की निर्मलता, पवित्रता व संतता हम सभी के लिए प्रेरणादायी रहे, यही शुभाकांक्षा है।'

भौतिक भ्रमण नहीं, आत्मरमण करें

६ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः बनियारा से खसिया की ओर प्रस्थान किया। मार्गस्थ हंसडिया के आदिवासी लोग आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। आज का विहार पथ विषमता धारण किए हुए था। सड़क निर्माण कार्य में लगे बड़े-बड़े वाहन, मशीनें और सैंकड़ों लोग भावी सुगम मार्ग का संकेत लिए हुए थे। मार्गस्थ लाल मिट्टी और वृक्षों से गिरे फूलों को देखकर ऐसा लग रहा था, मानों प्रकृति ने आचार्यप्रवर के स्वागत में 'रेड कारपेट' और फूल बिछा दिए हों। पथ की प्रतिकूलता में भी पूज्यप्रवर की समता यथावत बरकरार थी। लगभग १३.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर खसिया स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में पुनर्जन्म से बचने के लिए बाह्य भौतिक भ्रमण को छोड़कर आत्मरमण करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से खसियावासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए। उत्क्रमित मध्य विद्यालय के शिक्षक श्री राजीव मंडल ने आचार्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी।

प्रतिकूलता में अप्रभावित आचार्यप्रवर

७ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः खसिया से गजम्बा की ओर प्रस्थान किया। आज का विहार पथ गत दो दिनों की अपेक्षा काफी ठीक था, किन्तु स्थान-स्थान पर निर्मीयमाण पुल आदि के कारण कच्चा पथ ही वैकल्पिक मार्ग के रूप में उपलब्ध था। इस वैकल्पिक पथ पर वाहनों के आवागमन से मिट्टी का गुब्बार वातावरण में छा रहा था। इस कारण यत्र-तत्र कुछ प्रतिकूलता अनुभूत हो रही थी, किन्तु आचार्यप्रवर उससे सर्वथा अप्रभावित थे। सूर्य अपनी तेजस्विता के साथ आतप बरसा रहा था, किन्तु शीतल

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

हवा और वृक्षों की छाया के कारण राहगीर राहत का अनुभव कर रहे थे। नोनीहाट और सहेजना के ग्रामीणों को आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आज साध्वीवृंद का प्रवास स्थल आचार्यप्रवर के प्रवास स्थल से कुछ पहले ही स्थित था। विहार के दौरान महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने अपने प्रवास स्थल के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने वहां कुछ क्षण आसीन होकर उनसे वार्तालाप किया। करीब ६.५ किमी का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर गजम्बा में पधारे। उत्क्रमित मध्य विद्यालय में आज का प्रवास हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में श्रावक के तीन मनोरथों की चर्चा की। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्रामवासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए। विद्यालय के सहायक अध्यापक श्री कलाचन्द लायक ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

श्रावक समाज के लिए ध्यातव्य

परमाराध्य आचार्यप्रवर के आध्यात्मिक अनुशासन में तेरापंथ समाज में विभिन्न संस्थान कार्यरत हैं। उन संस्थानों में समय-समय पर समाज के अनेकानेक कार्यकर्ता अपनी-अपनी सेवाएं देते रहे हैं। श्री ख्यालीलाल तातेड़ (धानीन-मुम्बई) मुम्बई तेरापंथ समाज के एक वरिष्ठ व्यक्ति हैं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं देते हुए उन्होंने आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव का संयोजकीय दायित्व बखूबी संभाला। आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी के अध्यक्ष के रूप में संस्थान के आध्यात्मिक विकास का प्रयत्न करें, यह काम्य है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

२१००/- स्व. सुरेन्द्र गेलड़ा (सुपुत्र श्री जंवरीमल गेलड़ा, बीदासर-सूरत) की स्मृति में श्री जतन गेलड़ा, भ्राता अनिल, सुपुत्र व पुत्रवधू दीपक-खुशी गेलड़ा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री हंसराजजी गंग (गंगाशहर-प्रतापगंज-कोलकाता) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू सुधीर-सुनीता (जयपुर) सुनील-सरिता, सुशील-सुमन सुपौत्र सक्षम, सुपौत्री विनीता, निधि, अंशु, विप्रा, अपूर्वा, रिना गंग द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री दर्शनलालजी गोयल (लुधियाना) की तृतीय पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमा सुपुत्र व पुत्रवधू भारतभूषण-चेष्टा, सुपौत्र पुष्कर व सुपौत्री यशिका गोयल द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती छोटीदेवी डागा (धर्मपत्नी स्व. कन्हैयालालजी डागा, रायपुर) के तीसरे वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र राजेन्द्र, नरेन्द्र, सुरेन्द्र डागा द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री हंसराज बेताला, शुजागंज बाजार, पो.भागलपुर-८१२ ००१ (बिहार)

शिविर कार्यालय का मोबाइल नं. ०७३८४४३९५६०, ०७३८४४३९५६२

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-९, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी